Q Throw light on the history of Vakataka

Ans

वाकाटक राजवंश गुप्तों का समकालीन ~~राजवंश~~ राज्यथा। जिस प्रकार उत्तर भारत में गुप्त नरेशों का गौरवपूर्ण एवं आदरणीय स्थान था उसी प्रकार मध्य प्रदेश बरार एवं दक्षिण भारत में वाकाटक नरेशों का अपना एक अलग और महत्वपूर्ण स्थान था। इस वंश का इतिहास जानने के लिए अभिलेख, ताम्रपत्र, अजंता गुहा अभिलेख, ~~गुप्त~~ गुप्त कालीन अभिलेख आदि उपलब्ध सामग्रियां हैं। इस वंश का शासन तीसरी शताब्दी से छठी शताब्दी तक रहा।

अन्य राजवंशों की भांति इस वंश की उत्पत्ति के विषय में निश्चित तथ्य से कुछ ज्ञात नहीं है। वाकाटक राजवंश के संस्थापक विन्ध्य शक्ति को कोलिकिल नामक एक जाति का शासक माना गया है। विष्णु पुराण ने इस जाति के नरेशों की गणना यवनों से की है। किन्तु भ्रष्ट पाठ और अशुद्ध विन्यास के कारण ही भूल से विन्ध्य शक्ति को यवन तथा यूनानी माना

का माना गया है B.V. Mirashi के मतानुसार वाकाटक लोग ब्राह्मण वंश के थे और उनका संस्थापक विन्ध्य शक्ति विष्णुवृद्ध गोत्र का था। उनकी धारणा अजंता गुफा अभिलेखों पर आधारित है क्योंकि अजंता गुफा अभिलेख में वाकाटक राजकुल के प्रतिष्ठाता को 'द्विज' कहा गया है। डा० जायसवाल के अनुसार वाकाटक शक्ति का प्रारम्भ बुंदेलखंड से हुआ। उनका मूल निवास स्थान वाकाट था। Mirashi के अनुसार वे लोग दक्षिणा पथ के थे। जब तक निश्चित प्रमाण नहीं मिलता है तब तक इसके सम्बंध में कुछ भी कहना सम्भव नहीं है।

वाकाटक कुल की शक्ति का संस्थापक विन्ध्य शक्ति था। पुराणों के अनुसार विन्ध्य शक्ति केवल इस वंश का संस्थापक ही नहीं वरन् विदिशा और पुरिक (विदर्भ या बरार) का शासक भी था। सातवाहनों के बाद उसने नई शक्ति का विकास किया। अजंता अभिलेख में उसकी तुलना इन्द्र और विष्णु

पृथ्विषेण

ये) दक्षिण प्रशस्ति में पृथ्वीषेन को "कुंतलेन्द्र" की उपाधि दी गई है। चन्द्रगुप्त II ने उसके पुत्र रूद्रसेन II से अपनी पुत्री प्रभावती का विवाह किया था। इससे स्पष्ट होता है कि पृथ्वीसेन निश्चित ही एक महत्वपूर्ण शासक रहा होगा और वाकाटकों की सत्ता उसके समय तक अक्षुण्ण रही होगी। 25 वर्षों के शासन काल के बाद पृथ्वीषेण स्वर्ग सिधारा।

पृथ्वीसेन की मृत्यु के बाद रूद्रसेन II राजसिंहासन पर आरूढ़ हुआ। वह चन्द्रगुप्त II का दामाद था। उसने शैव धर्म त्याग कर वैष्णव धर्म ग्रहण किया था। वह एक शक्तिशाली शासक था। यही कारण था कि चन्द्रगुप्त II ने उससे अपनी पुत्री का विवाह किया था। उसका मुख्य उद्देश्य यह था कि [इस वैवाहिक सम्बंध के द्वारा वाकाटक शक्ति को तटस्थ कर दिया जाए, तब शक क्षत्रपों के खिलाफ लड़ा जाए। चन्द्रगुप्त II अपनी नीति में सफल हुआ। 390 ई० में 30 वर्ष की

अवस्था में ही रुद्रसेन का अकाल मृत्यु हो गई
और उसके बाद उसकी पत्नी प्रभावती-गुप्ता
संरक्षिका के रूप में शासन करने लगी।
पिता के सहयोग से प्रभावती
गुप्ता ने संरक्षिका के रूप में अपना शासन
अच्छी तरह से चलाया और वेसिम शाखा वाले
ने भी उसे तंग नहीं किया। प्रभावती गुप्ता का
शासन काल इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि
इस समय गुप्त साम्राज्य और वाकाटक राजवंश
के बीच अच्छे सम्बंध थे। उसके दो पुत्र थे
दिवाकरसेन और दामोदरसेन। दिवाकरसेन की
मृत्यु हो जाने के कारण दामोदर सेन ही राजसिंहा-
सन पर बैठा वही इतिहास में प्रवरसेन II के
नाम से प्रसिद्ध है। ~~कालिदास~~ कालीदास का
संबंध भी इस वंश के साथ जोड़ा जाता है।
प्रवरसेन II एक कुशल शासक
ही नहीं था वरन कलाप्रेमी भी था। उसके
कई अभिलेख मिले हैं। इस अभिलेख से
तत्कालीन अवस्था पर प्रकाश पड़ता है। साहि-

के प्रति भी उसे बड़ा अनुराग था और सेतुबन्ध काव्य का रचयिता भी उसे ही माना जाता है। उसने अपने राज्य को सुरक्षित रखा और प्रवर पुर नामक नगर की स्थापना की। 430 A.D में उसने अपने पुत्र का विवाह कुंतल नरेश की पुत्री अजित भट्टारिका से कर दी। प्रवरसेन के लगभग एक दर्जन ताम्रपत्र प्राप्त हुये हैं। ताम्रपत्रों में किसी प्रकार के रण अभियान का वर्णन नहीं है इसे साक्ष्यों के आधार पर यह अनुमान लगाया जाता है कि अमरावती, वर्धा, छिन्दवाड़ा, नागपुर, भण्डार तथा नाना घाट और मध्य प्रदेश का शेष भाग प्रवरसेन II के शासनाधीन था। उधर बेसीन शाखा के अधीन दक्षिणी बरार, उत्तरी पश्चिमी हैदराबाद तथा दक्षिणी महाराष्ट्र थे। प्रधान शाखा में प्रवरसेन शासन करता था तो बेसीन शाखा में रसी नाम का राजा समकालीन प्रवरसेन II राज्य करता था।

प्रवरसेन के बाद उसका पुत्र

नरेंद्रसेन शासक हुआ, नलो के शासक भवदत्त वर्मन और नरेंद्र सेन मे संघर्ष हुआ, संभवतः इसमें नल शासक भवदत्तवर्मन को सफलता मिली किन्तु उसकी मृत्यु के बाद नरेन्द्रसेन ने उसके पुत्र अर्थपति को पराजित कर पुनः अपने हारे हुये हिस्से को वापस कर लिया, नल राज्य के कुछ हिस्सो पर भी वाकाटक लोगो का अधिकार हो गया था, नलो को पराजित करने के कारण वाकाटको का तत्कालीन भारत में महत्व काफी बढ़ गया, ऐसा कहा जाता है कि इन लोगों ने मालवा तक अपना अधिकार बढ़ा लिया था, कोशल पर भी उनका अधिकार था, नरेन्द्रसेन के बाद उसका पुत्र रूद्रसेन उसका शासक हुआ, उसने नेसिक शाखा के साथ अपने अच्छे सम्बंध कायम रखे, उन्होने अपने राज्य की सीमा का विस्तार किया, उसके बाद उसका पुत्र पृथ्वीसेन II शासक हुआ, उसने भी नेसिक शाखा के साथ अच्छा सम्बंध रखा, त्रैकुटक के साथ उसका

संघर्ष हुआ फलतः 400 A.D. में उसका अंत हुआ और उसके बाद वाकाटक वंश का शासन बेसीम नेसिक शाखा के हाथ में चला गया।

बेसीम नेसिक शाखा का निर्माता प्रवरसेन का पुत्र सर्वसेन था। उसके बाद विन्ध्यशक्ति II शासक हुआ। उसने कुन्तल राज्य पर विजय प्राप्त की। इसने 15 वर्षों तक शासन किया। इसके बाद देवसेन तथा उसकी मृत्यु के पश्चात हरिषेण शासक हुआ जो इस वंश का सबसे शक्तिशाली शासक था। पृथ्वीसेन II के बाद हरिषेण ने प्रधान शाखा को भी अपने राज्य में मिला लिया। उसके समय में वाकाटक राज्य काफी दूर तक फैल गया। लेकिन उसके बाद हमें वाकाटक राज्य के बारे में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है और इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि उसके बाद वाकाटक साम्राज्य का पतन हो गया।

अभिलेखों और पुराणों से ज्ञात होता है कि अपने उत्कर्ष के काल में वाकाटक

Scanned with CamScanner

का प्रभुत्व सम्पूर्ण बुंदेलखंड, मध्य प्रदेश
बरार आदि प्रदेशों के ऊपर था। इसके
अतिरिक्त दुर्बल पड़ोसी राज्यों पर इसका
आधिपत्य था। Prof. Dubreuil के शब्दों
में "दक्षिण के उन समस्त राजवंशों में
जिन्होंने तीसरी शताब्दि ई० से छठी शताब्दि
ई० तक राज्य किया, सबसे अधिक और
गौरवपूर्ण एवं आदरणीय स्थान का पात्र
तथा सबसे- अद्वितीय तथा सम्पूर्ण दक्षिण के
राज्यों में श्रेष्ठतम सभ्यता वाला निश्चय ही
वाकाटकों का यशस्वी राजवंश था।"

---